अम्भोजनाभ मां पालय

रागम्: भैरवि ताळम्: त्रिपुट

(*श्री स्वाति तिरुनाळ् विरचित*)

पल्लवि

अम्भोजनाभ मां पालय सततं अम्भोजालयाजाने

अनुपल्लवि

जम्भवैरि वन्दित जलजे लोललोचन
कुम्भसम्भवविनुत कुन्तीसुतसारथे

चरणम्

भुजङ्गशयन हरे कृष्ण भुजङ्गवैरिरथ गोपी-
भुजङ्ग भामासङ्गरंग भुजङ्गवर कालीय दमन
भुजङ्गलोक वासिनुत भुजङ्गवरद देव देव
भुजङ्गभूषण सन्नुतलील भुजङ्गरूप संकर्षण ॥ १ ॥

नन्दनन्दन विभो मुचुकुन्दनानन्दकर सु-
नन्दनीय निजलील वन्दनीय वासुदेव
कुन्दसुम सुरुचिर मन्दहास विराजित
मन्दरधर गोविन्द सुन्दर् रूप हे ॥ २ ॥

लोल लोल वनमाल नील सुरभिल वाल
लालसित निज जाल पालितासुर वैरिजाल
बालसूर्यसमचेल बालागोप धृतशैल
पालित गो गोपल जाल जित शिशुपाल ॥ ३ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇